प्रेमचंद : एक विमर्श

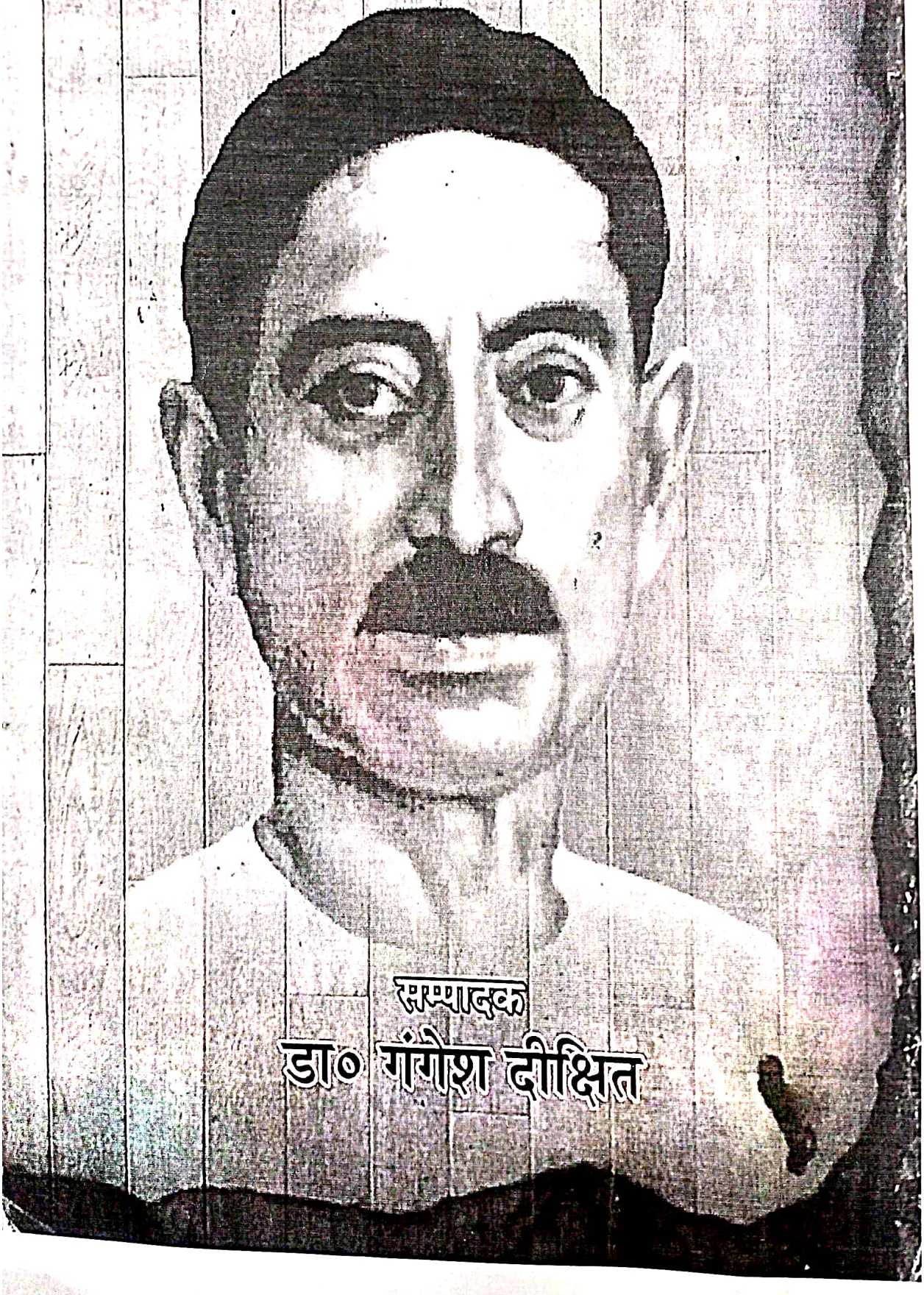

सम्पादक
डा० गंगेश दीक्षित

Rajnish V

प्रेमचन्द : एक विमर्श

सम्पादक

डा० गंगेश दीक्षित

असिस्टेन्ट प्रोफेसर (हिन्दी)

नागरिक पी०जी० कालेज

जंघई, जौनपुर (उ०प्र०)

हिन्दुस्तानी एकेडेमी

इलाहाबाद

प्रेमचन्द : एक विमर्श

ISBN	:	978-81-85765-85-3
संस्करण	:	प्रथम
प्रतियाँ	:	300 (तीन सौ)
मूल्य	:	₹ 150/- (एक सौ पचास रुपये मात्र)
प्रकाशक	:	सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडेमी
		१२-डी, कमला नेहरू मार्ग, इलाहाबाद-211001
Website	:	www.hindustaniacademy.com
E-mail	:	hindustaniacademyup@gmail.com
मुद्रक	:	एकेडेमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

प्रेमचन्द : एक विमर्श

ISBN	:	978-81-85765-85-3
संस्करण	:	प्रथम
प्रतियाँ	:	300 (तीन सौ)
मूल्य	:	₹ 150/- (एक सौ पचास रुपये मात्र)
प्रकाशक	:	सचिव, हिन्दुस्तानी एकेडेमी १२-डी, कमला नेहरू मार्ग, इलाहाबाद-211001
Website	:	www.hindustaniacademy.com
E-mail	:	hindustaniacademyup@gmail.com
मुद्रक	:	एकेडेमी प्रेस, दारागंज, इलाहाबाद

प्रकाशकीय

प्रेमचंद आधुनिक हिन्दी के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखक हैं। विचार धारा, भाषा और साहित्य के आदर्शों-मानदंडों को अनुकरणीय स्वरूप प्रदान करने वाले पहले लेखक। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन उनकी जमीन है तो स्वतंत्र-स्वस्थ राष्ट्र और समाज का निर्माण उनका आदर्श। वह प्रगतिशील आंदोलन की प्रेरणा और लेखक संगठन के पहले अध्यक्ष थे। उनके बाद हिन्दी कथा-साहित्य में जाने कितने प्रयोग हुए और कितनी महत्वपूर्ण कृतियाँ सामने आयीं, लेकिन आज भी वह नये से नये लेखक के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। अधुनातन साहित्यिक विमर्शों में भी वह प्रायः धुरी बन जाते हैं। उनके साहित्य के विवेचन-मूल्यांकन का सिलसिला बनाये रखना दरअसल हमारी अपनी जरूरत है। इसी क्रम में डा० गंगेश दीक्षित द्वारा संपादित पुस्तक 'प्रेमचंद : एक विमर्श' प्रकाशित करके हमें हर्ष हो रहा है। आशा है, शोधार्थियों और विद्वानों के बीच इसका स्वागत होगा।

दिनांक 16-08-2014

सचिव
हिन्दुस्तानी एकेडेमी

11. प्रेमचन्द के कथा-साहित्य में दलित अभिव्यक्ति	: डा० धर्मेन्द्र कुमार	74
12. राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन और प्रेमचन्द	: डा० अजय बिहारी पाठक	81
13. प्रेमचन्द के उपन्यासों में नारी	: डा० जगदम्बा प्रसाद दूबे	91
14. प्रेमचन्द के साहित्य में नारी चेतना	: रेखा सैनी	105
15. प्रेमचन्द की रचनाओं में स्त्री की छवि- प्रेमचन्द के नारी सम्बन्धी दृष्टिकोण	: गरिमा सिंह	111
16. स्त्री प्रश्न और प्रेमचन्द	: रजनीश कुमार यादव	117
17. साझी भाषा के पैरोकार	: डा० उदयभान यादव	126
18. पत्रों में प्रेमचन्द का स्वभाव	: राजीव यादव	130
19. प्रेमचन्द के उपन्यासों की रचना प्रक्रिया	: डा० अलका प्रकाश	139
20. गोदान में प्रेमचन्द	: कविता	146
21. गोदान में संयुक्त परिवार	: डा० रत्नेश कुमार शुक्ल	159
22. गोदान, कृषक जीवन का महाकाव्य	: डा० शिवशंकर श्रीवास्तव	163
23. पुरानी पीढ़ी (होरी) का नयी विद्रोही पीढ़ी (गोबर) से संघर्ष	: डा० गंगेश दीक्षित	170
24. 'सेवादन' में वेश्या जीवन की त्रासदी	: अवधेश कुमार	176
25. निर्मला में अभिव्यक्त नारी-मुक्ति का प्रश्न	: राजीव कुमार	182
26. कफन : एक प्रासंगिक वर्तमान	: डा० अंशुमान कुशवाहा	184
27. लेखक परिचय	:	191

❑❑

स्त्री प्रश्न और प्रेमचन्द

रजनीष कुमार यादव

उन्नीसवीं सदी के आरंभ से ही भारतीय स्त्री की स्थिति समाज सुधारकों की मुख्य चिंता का विषय बन गयी थी। सुधारवादी नेताओं और संगठकों ने स्त्री की स्थिति से संबंधित अधिकांश महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया। गाँधी जी जैसे नेता ने इस विषय पर बहुत कुछ कहा और लिखा। 'चाँद' जैसी पत्रिकाओं का स्त्रियों के हितों और प्रश्नों को उठाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रेमचंद का साहित्य लगभग 36 वर्षों का है। उन्होंने स्त्रियों के प्रति सतत रूप से संवेदनात्मक लगाव दिखाया। स्त्री प्रश्न पर ढ़ेर सारे परस्पर विरोधी विचारों के सान्निध्य में प्रेमचंद अपने युग की प्रकृति से हमारा परिचय कराते हैं। वे स्त्रियों के परंपरागत पराधीनता से स्वाधीनता की बात तो सहानुभूतिपूर्वक करते हैं, लेकिन वे स्वयं को परंपरागत हिंदू स्त्री के आदर्श वे अपने लगाव से छुटकारा नहीं पा सके। प्रेमचंद ने स्त्री-प्रश्नों को स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में उठाया था।

प्रेमचंद ने स्त्री प्रश्नों को पुरूषों की दृष्टिकोण से नहीं (बल्कि स्त्रियों की दृष्टिकोण से उठाया है- 'पिछड़े हुए हिंदी प्रदेश में उस समय स्त्रियों की छह समस्याएँ मुख्य रूप से उठायी जा रही थी-परदा प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, शिक्षा और राजनीतिक अधिकारों का सवाल।'[1] प्रेमचंद ने दहेज, वेश्यावृत्ति, विधवा जीवन, अनमेल विवाह और ऐसे ही अन्य प्रश्नों को भी उठाया। 'सेवासदन' की सुमन वेश्याजीवन के समस्त अन्तर्विरोधों को उजागर करने के लिए एक प्रतीक मात्र है, जो दहेज से जुड़ी हुई समस्या भी बन जाती है। 'निर्मला' में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या है। 'वरदान' और 'प्रतिज्ञा' में प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय स्त्री और विशेष रूप से विधवा-समस्या पर गहरायी से विचार किया है। 'प्रतिज्ञा' की शुरूआत ही अमृतराय की इस प्रतिज्ञा से होती है कि वह किसी विधवा से ही विवाह करेगा। 'वरदान' में उन्होंने मध्यवर्गीय विधवा स्त्री के रूप में वृजरानी की स्थिति का अत्यन्त यथार्थ चित्रण किया है। उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद ने स्वयं

स्त्री प्रश्न और प्रेमचन्द

रजनीष कुमार यादव

उन्नीसवीं सदी के आरंभ से ही भारतीय स्त्री की स्थिति समाज सुधारकों की मुख्य चिंता का विषय बन गयी थी। सुधारवादी नेताओं और संगठकों ने स्त्री की स्थिति से संबंधित अधिकांश महत्वपूर्ण प्रश्नों को उठाया। गाँधी जी जैसे नेता ने इस विषय पर बहुत कुछ कहा और लिखा। 'चाँद' जैसी पत्रिकाओं का स्त्रियों के हितों और प्रश्नों को उठाने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रेमचंद का साहित्य लगभग 36 वर्षों का है। उन्होंने स्त्रियों के प्रति सतत् रूप से संवेदनात्मक लगाव दिखाया। स्त्री प्रश्न पर ढ़ेर सारे परस्पर विरोधी विचारों के सान्निध्य में प्रेमचंद अपने युग की प्रकृति से हमारा परिचय कराते हैं। वे स्त्रियों के परंपरागत पराधीनता से स्वाधीनता की बात तो सहानुभूतिपूर्वक करते हैं, लेकिन वे स्वयं को परंपरागत हिंदू स्त्री के आदर्श वे अपने लगाव से छुटकारा नहीं पा सके। प्रेमचंद ने स्त्री-प्रश्नों को स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में उठाया था।

प्रेमचंद ने स्त्री प्रश्नों को पुरूषों की दृष्टिकोण से नहीं (बल्कि स्त्रियों की दृष्टिकोण से उठाया है- 'पिछड़े हुए हिंदी प्रदेश में उस समय स्त्रियों की छह समस्याएँ मुख्य रूप से उठायी जा रही थी-परदा प्रथा, बाल विवाह, विधवा विवाह, शिक्षा और राजनीतिक अधिकारों का सवाल।'[1] प्रेमचंद ने दहेज, वेश्यावृत्ति, विधवा जीवन, अनमेल विवाह और ऐसे ही अन्य प्रश्नों को भी उठाया। 'सेवासदन' की सुमन वेश्याजीवन के समस्त अन्तर्विरोधों को उजागर करने के लिए एक प्रतीक मात्र है, जो दहेज से जुड़ी हुई समस्या भी बन जाती है। 'निर्मला' में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या है। 'वरदान' और 'प्रतिज्ञा' में प्रेमचंद ने मध्यवर्गीय स्त्री और विशेष रूप से विधवा-समस्या पर गहरायी से विचार किया है। 'प्रतिज्ञा' की शुरूआत ही अमृतराय की इस प्रतिज्ञा से होती है कि वह किसी विधवा से ही विवाह करेगा। 'वरदान' में उन्होंने मध्यवर्गीय विधवा स्त्री के रूप में वृजरानी की स्थिति का अत्यन्त यथार्थ चित्रण किया है। उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद ने स्वयं